International Journal of Academic Research
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026

भारतीय साहित्य में आंध्र प्रान्त के हिन्दी साहित्यकारों का योगदान

डॉ. नक्का वेंकट रमणा
हिन्दी विभागाध्यक्ष, सरकारी महाविद्यालय, रामचंद्रपुरम, डॉ. बी. आर. आंबेडकर कोनासीमा जिला, आंध्रप्रदेश|

हिंदी साहित्य प्रत्येक वर्तमान को कलात्मक ढंग से यथार्थ रूप में समाज के सम्मुख रखता है| हिंदी भाषा और साहित्य का भारतीय संस्कृति, समाज और राष्ट्रीय चेतना के विकास में अमूल्य योगदान है | साहित्य समाज का दर्पण होता है, और समाज का प्रतिबिम्ब भी साहित्य पर प्रभाव पड़ता है| साहित्य लोक जीवन का अभिन्न अंग होता है| वर्तमान युग में साहित्य सामाजिक सांस्कृतिक चेतना को जागृत करने वाला एक प्रभावशाली माध्यम बन चूका है | समकालीन कविताएं, लघु कथाएं और नाटक सामाजिक अन्याय, उपन्यास और नाटक, सामाजिक अन्याय, असमानता, धार्मिक असहिष्णुता और नैतिक विचलन जैसे विषयों पर साहसपूर्वक प्रश्न उठाते हैं|

हिंदी साहित्य न केवल भारतीय समाज का दर्पण है, बल्कि यह समय के साथ विकसित होकर एक जीवंत भाषा के रूप में भारतीय अस्मिता को मजबूती प्रदान कर रहा है| आन्ध्र प्रान्त के तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकारों ने अधिक समय से भारतीय समाज, संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम और वैचारिक चेतना को आकर देने में केन्द्रीय भूमिका निभाई हैं-

आलूरी बैरागी चौधरी:

तेलुगु भाषी हिंदी कवियों में एक बैरागी जी ने बचपन में ही अपनी मातृभाषा तेलुगु के साथ-साथ राष्ट्र भाषा हिंदी का भी अध्ययन किया, थोड़े समय के लिए उन्होंने अध्यापन का कार्य भी किया और कुछ समय के लिए नौकरियाँ भी की, पर वे अपने घुमक्कड़ स्वभाव और स्वछंद प्रवृत्ति के कारण कहीं भी अधिक समय के लिए टिक नहीं पाए| वे जीवन पर्यंत मुक्त रचनाकार ही रहे | बैरागी जी तेलुगु के युग प्रवर्तक कवि है|ये चार वर्ष के लिए 'चंदमामा' के तेलुगु और हिंदी संस्करणों के सम्पादक रहे|वे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,मद्रास के हिंदी प्रशिक्षण विद्यालय में आचार्य भी रहे| लेकिन अपनी स्वतंत्र प्रवृत्ति और निर्भीकता के कारण ज्यादा दिन कहीं टिक नहीं सके| वे आजीवन अविवाहित रहे, कोई घर नहीं बसाया, धन-संपत्ति का उन्हें कभी मोह नहीं रहा|१९५१मे उनका हिंदी काव्य-संग्रह "पलायन" प्रकाशित हुआ था जिसकी तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में काफी चर्चा हुई थी||

कवि बैरागी ने हिंदी को अपनी समस्त रचनाओं को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया है| पहला भाग है 'प्रीत और गीत', दूसरा भाग है 'आदि कविताएँ' और तीसरा भाग है 'आधुनिक'| उनकी कृतियों में मुख्यतः तीन प्रकार के स्वर गूँजते सुनाई देते हैं| कवि की प्रारम्भिक कृतियाँ छायावादी प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत हैं| इस जगत की विभीषिकाओं को देख कर कवि का हृदय व्यथित हो उठता है | मानव की व्यथा-गाथा का सजीव चित्र इन रचनाओं में अंकित है| किसी ने ठीक ही कहा है कि कवि बैरागी की कृतियों का स्थूल रूप से अनुशीलन करने पर भाषा की दृष्टि से वे छायावादी तथा भावना दृष्टि से वे प्रगतिवादी परिलक्षित होते हैं | जहाँ छायावादी कवि मूलतः अन्वेषण, नैराश्य, पीड़ा, आशा इत्यादि के स्वर गुंजित होते हैं, वही प्रगतिशील कवि जीवन और जगत की विषमताओं, अन्धविश्वास एवं सामाजिक रूढ़ियों, अन्याय, अत्याचार, विडम्बना, भूख, बेकारी एवं दरिद्रता के प्रति अपना आक्रोश प्रकट करता है और उनका उन्मूलन करके नई सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की आकांक्षा करता है| ये सभी स्वर हम कवि बैरागी जी की कविताओं में और गीतों में प्रतिबिंबित पते हैं|

डॉ. पी. अप्पलाराजू:

डॉ.पी.ए.राजू जी का जन्मस्थान श्रीकाकुलम जले के चीपुरिपल्ली रेलवे स्टेशन से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'मेरकमूडीदाम' है| एक सुसंस्कृत परिवार में 16 जून १९२८ को इनका जन्म हुआ | | १९३५ में वे हिन्दी प्रचारक बने| उनकी प्रामाणिक प्रचारक संख्या 4261 है| डॉ.राजूजी की नियुक्ति महाराजा कालेज में अध्यापक के रूप में हुई| पंद्रह वर्ष तक यही अध्यापक तथा विभागाध्यक्ष के रूप में काम कर चुके| 1974 से 1985 तक आंध्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे |

स्तरीय हिंदी तथा तेलुगु की पत्र-पत्रिकाओं में डॉ. राजू जी की दो सौ से अधिक निबंध, मौलिक और अनूदित कहानियाँ प्रकाशित हुई| 'छाया वाद एवं भाव वाद' डॉ. राजूजी की प्रथम समीक्षात्मक पुस्तक है|

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद की ओर से इस रचना का प्रकाशन हुआ| डॉ.राजू जी ने आरम्भ से ही छायावादी काव्य धारा का उत्साहपूर्वक अनुशीलन किया है और तेलुगु साहित्य में इसकी समधर्मी काव्य धारा भाववाद से इसका तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है| इन दोनों काव्य धाराओं के उद्भव और विकास को स्पष्ट करते हुए डॉ. राजू जी ने दोनों भाषाओं के प्रतिनिधि काव्यकारों की तुलना प्रस्तुत की है|

सुमित्रानंदन पन्त तथा कृष्ण शास्त्री की स्वछंदतावादी काव्य कृतियाँ डॉ.पी.ए.राजू जी की शोध-रचना है | इस पर उन्हें सन १९७३ में आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की जा चुकी है| छायावादी काव्यान्दोलन के ब्रुहत्रयी में से एक कवि सुमित्रानंदन पन्त तथा भाव वादी काव्यान्दोलन के प्राण कवि देवुलपल्ली कृष्ण शास्त्री के स्वछंदतावादी काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन डॉ.राजू जी के वर्षों के परिश्रम का फल है| राजू जी की दृष्टि सुलझी हुई है और परिचयात्मक सह विवेचनात्मक ढंग से हिन्दी और तेलुगु की स्वछंदतावादी कविता के दो प्रतिष्ठित कवियों की उपलब्धियों को उन्होंने हमारे सामने रखा है| पन्त जी की 'वीणा' 'ग्रंथि' 'पल्लव' 'गुंजन' तथा 'युगांत' और कृष्ण शास्त्री की 'कृष्ण पक्षमु' 'प्रवासमु' तथा 'ऊर्वशी' कृतियों का प्रायः सर्वांगीण विश्लेषण राजूजी का अभीष्ट है| युगीन परिस्थितियों छायावादी कविता तथा भाव कविता का स्वरूप-विवेचन, दोनों कवियों की जीवनियाँ तथा व्यक्तित्व इस ग्रन्थ की भूमिका का काम करते हैं|

आचार्य. पी. आदेश्वर राव:

समकालीन पीढ़ी के वरिष्ठ हिन्दी आचार्यों, कवियों, समीक्षकों और अनुवादकों में आचार्य राव जी का नाम विशेष आदर में साथ लिया हटा है| निश्चय ही वे समकालीन हिन्दी कविता के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवियों में से हैं| दक्षिण के जिन काव्यकारों ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और सृजन की अपरिमेय क्षमता से वस्तुगत एवं शिल्प गत वैशिस्टय से आधुनिक हिंदी कविता को वैविद्यपूर्ण एवं सुसंपन्न बनाया है| उनमें आचार्य आदेश्वर राव अग्रणी हैं| राव जी हिन्दी, तेलुगु और अंग्रेजी भाषाओं के मर्मज्ञ विद्वान हैं| इन तीन भाषाओं में काव्यकार, आलोचक, निबंधकार एवं अनुवादक के रूप में अपनी उपलब्धियों को लेकर वे अनुपम ख्याति अर्जित कर चुके हैं|

हिंदी, तेलुगु एवं अंग्रेजी के कवि, समीक्षक एवं अनुवादक के रूप में प्रो. राव का व्यक्तित्व बहुआयामी रहा और उनकी साहित्यिक उपलब्धियां उच्च स्तरीय प्रमाणित हुई| 'अंतराल', 'धार के आर-पार' और 'वातायन ये प्रेम-सौध के' आदेश्वर राव जी के मौलिक काव्य-संग्रह है| छायावादी शैली में लिखी गई उनकी कविताओं में प्रेम और सौंदर्य की सूक्ष्म अभिव्यक्ति निराले ढंग से पी जाती है|कल्पना लोक में स्वछन्द विचरण करनेवाली कवि की प्रतिभा मानव-मन के अछूते आयामों को आविष्कृत करने में निराले ढंग से अभिव्यक्ति को पाती है|कवि के रूप में आदेश्वर राव जी छायावादी कवियों की समकक्षता के दावेदार हैं|

उनकी एक विशिष्ट कविता है- "सपनों में कोई आती है| वसुंधरा के रूप-रंग हर, अन्धकार जब छा जाता है, जब रजनी के बहु-वलय में, विपुल विश्व भी खो जाता है, तब छिपकर मेरी पलकों में , कोई रूपसी घुस आती है|" इस कविता में राव जी ने विभिन्न प्राकृतिक अंगों में नारी-मूर्तियों की कल्पना की है| सुंदर प्राक्रुतिक् बिम्बों के माध्यम से वे प्रेयसी के प्रकट होने का अभिवर्णन करने में अपनी कुशलता का परिचय देते हैं|

उनकी और एक कविता "पंख लगा दो प्राणों में, उड़ जाऊं मैं मुक्त गगन में, लेकर तुझको बाँहों में| भय से मत हो जाओ कम्पित, ने से मत हो जाओ पुलकित, मुझसे मत हो जाओ शंकित, विचरेंगे मेघों के वन में|"-- राव जी की एक ऐसी कविता है जिसमें वैयक्तिकता का स्वच्छ एवं सशक्त स्वर ध्वनित होता है | इसमें कवि की प्रेम भावना गहन रूप से उभरती है |कवि ने निःस्वार्थ एवं पवित्र प्रेम की सुन्दर अभिव्यक्ति दी है|

आचार्य. वाई. लक्ष्मी प्रसाद:

आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष, राज सभा के पूर्व सदस्य, आंध्र विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष, जन शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष आचार्य लक्ष्मी प्रसाद एक विलक्षण प्रतिभा के धनी वशिष्ठ साहित्यकार हैं| प्रसाद जी ने हिन्दी और तेलुगु भाषाओं के मध्य

शोधकार्य, आलेख, आलोचना तथा अनुवाद के द्वारा संवृद्ध संवाद गतिशील किया है| एक रचनाकार के रूप में वे बराबर प्रयत्नशील हैं कि मानव-मूल्यों एवं सांस्कृतिक उन्नयन की उपेक्षा न की जाए| समकालीन साहित्य जगत में आचार्य लक्ष्मी प्रसाद की हिंदी एवं तेलुगु में प्रकाशित पुस्तकों ने एक महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है|

आपको हिंदी में प्रकाशित पुस्तकें है- 'तेलुगु के आधुनिक कवि बैरागी', 'हिंदी कविता को आंध्रों की देन', वैचारिक क्रांति के अग्र दूत कविराज त्रिपुरनेनी रामास्वामी', 'ज्नानपीठ पुरस्कार विजेता डॉ. सी. नारायण रेड्डी' 'आत्मकथा', 'कविराज त्रिपुरनेनी के दो पौराणिक नाटक' आदि| आपके संपादन में 'सहस्र वर्षों का तेलुगु साहित्य', 'आंध्र प्रदेश में हिन्दी साहित्य के विकास का इतिहास', 'आंध्र प्रदेश में हिंदी प्रचार आन्दोलन का इतिहास', आदि पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं|

तेलुगु में उनकी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं- 'सप्तस्वरालु', 'जाति नेता जयप्रकाश नारायण', 'वर्तमान राजकीय दुस्थिति', 'केरटालू', 'तमस', 'इरवै ओकटो शताब्दम लोकि', 'वेदना भरितम अबला जीवितम', 'ययाति', 'हिंदी साहित्य चरित्रा' 'डॉ. राममनोहर लोहिया', 'पुच्चलपल्ली सुंदरय्या', डॉ. हरिवंश राय बच्चन-आत्मकथा', 'कथनालावेनुका कथलु', 'सत्यभामा', 'पाकिस्तान लो पड़ी रोजुलु' आदि| पत्र-पत्रिकाओं में इनके शताधिक लेख प्रकाशित हो चुके हैं| आचार्य वाई. लक्ष्मी प्रसाद संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, बेल्जियम, मलेशिया, सिंगापुर, यूके, उक्रेन, ईजिप्ट, थाईलेंड, यू.ए.ई. पाकिस्तान, आदि देशों की यात्रा कर चुके हैं|

आचार्य. एस. ए. सूर्य नारायण वर्मा:

आचार्य वर्मा जी एक तेलुगु भाषी हिंदी रचनाकारों में एक प्रतिभा के धनी काव्यकार हैं| उनका काव्य कृति है 'छायावादी और भाववादी काव्य में प्रकृति चित्रण'| इसमें और हिंदी साहित्य जगत में एक बहु चर्चित अनूदित कृति 'सीतायनम' का हिंदी रूपांतरण है|यह एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में प्रतिष्ठित हुई है| यह मूल कृति प्रख्यात तेलुगु साहित्यकार और कवि श्री वेलुगूरी बसव पुन्नय्या जी से लिखी गई है| इस उपन्यास में लेखक ने रामकथा के एक अत्यंत संवेदनशील और विचारों का तेजस पक्ष का पुनर्विचार किया है| विशेष रूप से उन्होंने राष्ट्र-धर्म और मानव-धर्म के प्रश्नों की पृष्ठ भूमि में यह विश्लेषण करने का प्रयास किया है| आचार्य सूर्य नारायण वर्मा जी आपके रचनाओं में वे पूरी निष्ठा के साथ सुरक्षित रखने का प्रयास किया है| यह अनुवाद क्षमता का प्रमाण है| वे हिंदी भाषा में सहज पूर्ण सम्प्रेषणशील, प्रतिबद्धता का रचनाकार हैं| उनकी अनुवाद की क्षमता, मूल पाठ के प्रति निष्ठा भावानुवाद की कुशलता एक विशिष्ट अनुवादक के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है| उनकी रचना का कार्य हिंदी साहित्य जगत में सदा स्मरणीय रहेगा|

तेलुगु भाषी हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य जगत में अपना योगदान प्रतिष्ठित किया| वे सभी लेखक अत्यंत अनुभवी, परिश्रमी, अध्ययनशील तथा सुधी विद्वान हैं|

सहायक ग्रंथ सूची:

1. हिन्दी कवीता को आँध्रों की देन (1985, 2009), आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद
2. आँध्र प्रदेश में हिन्दी साि◌हत्य के विकास का इतिहास' (2011)-आचार्य यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद